स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

पीएच.डी (हिंदी) पंजीकरण हेतु प्रस्तुत आरंभिक शोध-प्रारूप

“ संजीव की कहानियों में व्यवस्था का शिकार वर्ग ”

शोध - छात्र

घुलेश्वर शिवराज गोविंदराव

शोध निर्देशक

प्रा.डॉ.एम.डी इंगोले

अध्यक्ष, हिंदी विभाग

संत जनाबाई कॉलेज, गंगाखेड

जि.परभणी

जनवरी - २०१५

“ संजीव की कहानियों में व्यवस्था का शिकार वर्ग ”

प्राक्कथन :-

साहित्य जगत समाज का आईना होता है । समाज में जो भी बदलाव होता है उस बदलाव का चित्र साहित्य में दिखाई देने लगता है । हिंदी साहित्य जगत भी इससे अछूता नही है । हिन्दी साहित्य में पद्य की अपेक्षा गद्य साहित्य में बदलाव का चित्र यथार्थ रूप से दिखाई देता है । गद्य साहित्य में कहानी विधा अपना अलग स्थान रखती है। साहित्य जगत में कुछ कहानियाँ काल्पनिक होती है, आदर्शवादी होती है तो कुछ यथार्थवादी भी होती है । हिन्दी कहानी अपने जन्म काल से ही यथार्थाभिमुख ही है । प्रेमचंद से लेकर समकालीन कहानीकारों तक ने इस यथार्थ को विविध रूपों और रंगों में अपनी काहानियों में प्रस्तुत किया है । कहानी विधा समकालीन यथार्थ का तिरस्कार कर या उससे मुँह मोडकर अपनी सफल विकास यात्रा पूरी नही कर सकती । समकालीन हिन्दी कहानियों में भारतीय जीवन का यथार्थ रुप अनेक रंगो में व्यक्त हुआ है । जीन कहानिकारों ने इस यथार्थ को अपने से अलग नही होने दिया है उनमें से संजीव प्रमुख है । समकालीन कहानिकारों में संजीव प्रमुख हस्तक्षर माने जाते है । उनका साहित्य कें क्षेत्र में रचना संसार बहुआयामी है । उनके व्यक्तित्व के अनेक पहेलू है, कहानीकार, उपन्यासकार, लेखक, सम्पादक, निबन्धकार, नाटककार तथा हिन्दी सहित्य अन्य विधाओं में लेखन कार्य करके अपनी अलग सी पहचान बनाई है ।

शोध विषय चयन की प्रेरणा :-

हिन्दी साहित्य की पद्य की अपेक्षा गद्य साहित्य मुलतः मेरी रूचि का विषय रहा है। बी.ए, एम.ए, की शिक्षा प्राप्त करते समय समग्र विधाओं का अध्ययन किया लेकिन जब एम.फिल् को प्रवेश लिया तब समकालीन साहित्यकार संजीवजी ने मुझे बडा प्रभावित किया । उनकें ‘ जंगल जहाँ शुरू होता हैः एक अनुशीलन ’ इस विषय पर शोध कार्य पूरा किया । इस लघुशोध प्रबंध के कार्य के पश्चात इनकी कहानियों के उपर शोध

कार्य करने की रूचि मन में निर्माण हुई । मैने उनका साहित्य क्रमशः पढा है । उनकें साहित्य ने मुझे और भी प्रभावित किया तथा कहानियों के उपर शोध कार्य करने की प्रेरणा भी मिली । 'संजीव के कहानियों में भारतीय जीवन यथार्थ' इसी विषय पर आदरणीय गरूवर्य डॉ.एम.डी.इंगोले सर जी से चर्चा करने के पश्चात मुझे इस विषय पर शोध कार्य करने के लिए अनुमति दी । इसके पश्चात यह विषय शोधकार्य हेतु निश्चित किया गया ।

शोध विषय की रुपरेखा :-

मेरे इस शोध विषय का शीर्षक है " संजीव की कहानियों में व्यवस्था का शिकार वर्ग "। किसी भी शोध कार्य को सुचारू रूप से पूरा करने क लिये नियोजन की आवश्यकता होती है । हमने शोध अध्ययन की सुविधा हेतु शोध विषय को ५ अध्यायों में विभाजित कर अनुसंधान करणे का संकल्प किया है ।

१. प्रथम अध्याय :- संजीव का समकालीन साहित्य परिवेश
२. व्दितीय अध्याय :- संजीव के कहानियों की कथावस्तु
३. तृतीय अध्याय :- संजीव के कहानियों में शिकार वर्ग
४. चतुर्थ अध्याय :- संजीव के कहानियों का शिल्पगत अध्ययन
५. पंचम अध्याय :- उपसंहार

१. प्रथम अध्याय :-

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत साहितय परिवेश का अध्ययन किया जायेगा । इस अध्याय में समकालीन कहानी की विकास प्रक्रिया , कहानीकार कहानियों की विषयवस्तु परिस्थितियाँ आदि पर प्रकाश डाला जायेगा ।

२. व्दितीय अध्याय :-

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत संजीव के कहानियों की कथावस्तु का अध्ययन किया जायेगा । संजीव की कहानियों के विषय , पात्र , कौन-कौन से क्षेत्र से जुडी हुई कहानियाँ है । इसका अध्ययन किया जायेगा ।

२. तृतीय अध्याय :-

प्रस्तुत इस अध्याय के अंतर्गत संजीव की कहानियों में व्यवस्था का शिकार वर्ग के बारे में अध्ययन किया जायेगा । इसमें शिकार वर्ग की सामाजिक, आर्थिक, राजनितीक, धार्मिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक व्यवस्था का अध्ययन किया जायेगा तथा शिकार वर्ग के समस्याएँ कारणों तथा इन समस्याओं के कारण उणपर होनेवाले प्रभाव की जानकारी इस अध्याय में ली जायेगी ।

४. चतुर्थ अध्याय :-

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत संजीव की कहाहनयों का शिल्पगत अध्ययन किया जायेगा । शिल्प कें अंतर्गत भाषा , भाव, बिम्ब , समकालीन कहानी साहित्य का उद्देष्य के बारे में जानकारी दी जायेगी । भाषा में विभिन्न तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी, अंग्रेजी आदि शब्दों के बरे में जानकारी दी जायेगी । साथ ही भाषा कें संवाद लयात्मकता, प्रवाहमयता, स्वच्छंदता आदि की जानकारी दी जायेगी ।

७. पंचम अध्याय :-

इस अध्याय के अंतर्गत शोध विषय के आधारभूत अध्ययन को संक्षेप में निर्दिष्ट करते हुए अध्ययन के उपसंहार एवं निष्कर्ष को रखा जायेगा । जिसमें चार अध्यायों से निकले निष्कर्ष तथा उनकी नविनता इसपर संक्षेप में जानकारी दी जायेगी । इस अध्यायों से निकले निष्कर्ष शोध विषय हो सकते है इस और संकेत किया जायेगा ।

अनुसंधान का उद्देश्य :-

१. संजीव के समकालीन साहित्य परिवेश का अध्ययन करना ।

२. संजीव के कहानियों की कथावस्तु का अध्ययन करना ।

३. संजीव कें कहानियों में शिकार वर्ग का अध्ययन करना ।

४. संजीव कें कहानियों का शिल्पगत अध्ययन करना ।

अनुसंधान पद्धति :-

इस शोध कार्य के लिए विवेचनात्मक तथा विश्लेषनात्मक पद्धति को आधार बनाकर शोध कार्य किया जायेगा ।

प्रस्तुत शोध परियोजना यथा संभव परिवर्तनीय होगी ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ) संजीव के कहानी संग्रह :-

१) तीस साल का सफरनामा, दिशा प्रकाशन, दिल्ली (१९८१)

२) 'आप यहाँ है' अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली (१९८४)

३) भूमिका और अन्य कहानियाँ पराग प्रकाशन, दिल्ली (१९८४)

४) दुनिया की सबसे हसीन औरत यात्री प्रकाशन, दिल्ली (१९८७)

५) प्रेरणास्त्रोत और अन्य कहानियाँ किताब घर, नई दिल्ली (१९९६)

६) प्रेतमुक्ति दिशा प्रकाशन, दिल्ली (१९९५)

७) ब्लैक व्होल दिशा प्रकाशन , दिल्ली (१९९७)

८) डायन और कहानियाँ नेशनल लिटरसी मशीन (१९९९)

९) खोज दिशा प्रकाशन दिल्ली (२०००)

आ) संदर्भग्रंथ :-

१) चतुर्वेदी (डॉ)ऋषिकुमार :- हिंदी कहानी एक दशक तारा मंडल प्रकाशन अलिगढ(१९९०)

२) पान्डेय राशि भूषण :- नई कहानी शिल्पगत प्रयोग, लोकभारती प्रकाशन इलाहबाद (१९७४)

३) सिन्हा सुरेश :- हिंदी कहानी उद्भव और विकास अशोक प्रकाशन, नई सडक दिल्ली (१९६७)

इ) विश्वकोष :-

१) डॉ.बसु नगेंद्रनाथ हिंदी विश्वकोष बी.आर पब्लिशिंग कार्पोरेशन दिल्ली, पुनमुद्रण - १९८६

ई) शब्दकोश :-

१) स.बाहरी हरदेव राजपाल हिंदी शब्दकोष राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट दिल्ली , ११वीं सरकार १९९७.

उ) पत्र पत्रिकाएँ :-

१. नया मानदंड

२. वाग्‌र्थ

३. संकल्प

४. हंस

५. संजीव के साक्षात्कार

शोध छात्र

घुलेश्वर शिवराज गोविंदराव

शोध निर्देशक

प्रा.डॉ.एम.डी.इंगोले
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
संत जनाबाई कॉलेज, गंगाखेड
जि.परभणी